ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.XI/May 2012;pp.1-4

Research Paper

मीराँ की भक्ति में संगीत

डॉ. सौ. अर्चना माधव अंभोरे
श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला
महाविद्यालय, अकोला

प्रस्तावना :–

मीराँ व्दारा रचित काव्य धारा से वर्तमान वायुमंडल भी गुंजायमान है । मीराँ का काव्य परम सौंदर्यमय सत्य की अनुभूतिमयी वाणी है । मानवता की मूलभूत अनुभूतिमयता के मार्मिक स्तर पर अपने युग की महत्तम काव्यचेतना का सत्यधर्मी है ।

मीरा को प्रभु-भक्ति की पीर ने ही उन्हे कवयित्री और गायिका बना दिया था । कृष्ण प्रेम में पगी हुई संगीत धारा पदों और भजनों के रुप मे आज भी प्रवाहित है । मीराँबाई भक्त कवी तो थी ही साथ-साथ एक सफल गायिका और संगीतज्ञा भी थीं । मीरा व्दारा रचित काव्य रचनाओं में संगीत की माधुर्यता तथा गायन कुशलता का दृष्टांत मिलता है ।

प्रस्तुत शोधनिबंध में मीराँ की भक्ति, मीराँ के काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति, मीराँ की प्रेमाभक्ति, मीराँ के आराध्य, मीराँ की उपासना पध्दति, मीराँबाई और उनका संगीत -ज्ञान के बारे में संशोधन परक अनुशीलन किया गया है ।

भक्ति की पावन धारा ऋग्वेद से प्रवाहित हुई तथा 'सामवेद' का उद्भव 'ऋग्वेद' में वर्णित ईशोपासना युक्त ऋचाओं का गायन करने के लिये हुआ था । 'भक्ति' शब्द का प्रथम प्रयोग परवर्ती भक्तों में प्रचलित हुआ, श्वेताश्वतर उपनिषद में मिलता है । 'अग्नि'१ और 'इन्द्र'२ के प्रति अनुरागपरक स्तुतियाँ ऋग्वेद में है ।

इससे यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन युग से ही ईशस्तुतिमें संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । सामगायन के साथ ही नृत्य को भी भक्ति के अंतर्गत मान्यता प्राप्त थी । ३ वैदिक साहित्य के उपरांत सूत्र - साहित्य का अवलोकन करनेसे यह विदित होता है की, इस युग में भी यज्ञों के अवसर पर सामगायन होता था । श्रुतियों में भक्ति का बीज मान लेने पर यह निष्कर्ष अनिवार्य है की संहिताओंकी श्रध्दा - मूलक अनुराग की व्यंजना करनेवाले मंत्रों के रचयिता ऋषियोंके हृदय में राग का वह तत्व अवश्य रहा होगा, जो स्वाभाविक रुपसे विकसित होकर ईश्वरानुरक्ति में परिणत हो जाता है । प्राचीन युग सेही ईश्वर भक्ति में संगीत का उच्चतम स्थान रहा है ।

भक्ति के अष्टविधा, श्रवण, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन दास्य, स्मरण, पाद-सेवन, साख्य तथा आत्मनिवेदनसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान कीर्तन को प्राप्त है । भारतीय संगीत का प्रारंभसेही लक्ष्य वैषयिक तृप्ति तथा पार्थिव सुख की ओर न होते हुये आत्मा का परमात्मा में विलय ही रहा है ।

४ भक्तियुक्त काव्यों को संगीत शास्त्र के अंतर्गत विकसित विविध शैलियों के अनुसार गाने की परिपाठी प्राचीन युग से ही परिलक्षित होती है । साम - संगीत इसका आदिरुप सर्वसम्मत है । साम के उपरांत जातिगायन का अविर्भाव विशिष्ट जातियों के कारण इनके इष्टदेवता के गुणानुवाद के लिये हुआ । भरतकाल में ही जाति गायन की श्रेष्ठता अधिक मान्य थी कि इसके गायन से ब्रह्म हत्या के पातक से मानव मुक्त हो जाता था ।

मीराँ की भक्ति -

'भगवान का अनुस्मरण करनेवाले जन के लक्ष्य में भगवान के प्रति जो आसक्ति पूर्ण अनपायिनी प्रीति होती है, वही भक्ति कहलाती है '। भगवान के रुप, गुण आदि के विषय में समग्र चित्त को व्याप्त कर लेनेवाली वृत्ति भक्ति है ।५ (निम्बार्क मत)

हिंदी के भक्त कवियों ने भक्त जीवन की रम्य झाँकियाँ प्रस्तुत की है, जिनमें भक्ति के स्वरुप की व्यंजना हो जाती है । तुलसीने जिसे 'राम पद नेह ' कहा है, सूर के शब्दों मे जो गोपाल के व्दारा गोपी का मनहरण है, 'जहाज के पंछी की उडकर फिर जहाज की ओर' की गति है, कबीर जिसे हरिरस का खुमार कह गये है, वह सब भक्ति ही है । मीरा का गिरधर के रंग रचना भी इसी का पर्याय है ।

मीरा के काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति :

मीरा का काव्य परम सौंदर्यमय सत्य की अनुभूतिमयी वाणी है । कबीर का पौरुष, तुलसी का चैतन्य और सूर की अन्तर्दृष्टि भले ही उस में नही है मात्र मानवता की मूलभूत अनुभूतिमयता के मार्मिक स्तर पर अपने युग की महत्तम की मूलभूत अनुभूतिमयता के मार्मिक स्तर पर अपने युग की महत्तम काव्य चेतना का समधर्मी है ।

मीरा के समय सगुणवादी अनेकोनेक पुराणों के मंथन में लगे थे, निगमागम-सम्मत पथ की शोध चल रही थी । साधना का राजपथ बन रहा था । मीरा ने केवल लक्ष्य को पहचाना और उस ओर बढ गई । जहाँ जहाँ उनके चरण पडते गये राह बनती गयी सीधी सरल प्रेम की राह, जो न दर्शन की मुखा पेक्षी थी और न किसी सम्प्रदाय की अनुवर्तिनी ।

मीरा की प्रेमाभक्ति :

१)वल्लभ संप्रदाय की चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार मीराँबाई श्रीनाथजी के प्रति श्रध्दालु अवश्य थी, पर इनके इष्टदेव 'ठाकुर' ही थे ।

२)नागरीदास जी का भी एक असंदिग्ध प्रमाण है कि मीरा पद बनाकर 'ठाकुर' के आगे गाती थी ।६

३)गिरधर नागर के अतिरिक्त प्रभू के किसी अन्य रुप का उल्लेख क्या, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई संकेत भी उनके वक्तव्य में नही मिलता ।

उदा. -

आपुन गिरिधर न्याव कियो यह, छान्यो दुधरु पानी,
मीराँ प्रभु गिरिधर नागर के चरन कमल लपटानी ।७

'गिरधर नागर' के अतिरिक्त प्रभु के किसी अन्य रुप का उल्लेख क्या, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई संकेत भी उनके इस वक्तव्य नही है ।

मीरा का आराध्य :

१)वल्लभ संप्रदाय की चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार मीराँबाई श्रीनाथजी के प्रति श्रध्दालु अवश्य थी, पर इनके इष्टदेव 'ठाकुर' ही थे ।

२)नागरीदास जी का भी एक असंदिग्ध प्रमाण है कि मीरा पद बनाकर 'ठाकुर' के आगे गाती थी ।६

३)गिरधर नागर के अतिरिक्त प्रभू के किसी अन्य रुप का उल्लेख क्या, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई संकेत भी उनके वक्तव्य में नही मिलता ।

उदा. -

आपुन गिरिधर न्याव कियो यह, छान्यो दुधरु पानी,
मीराँ प्रभु गिरिधर नागर के चरन कमल लपटानी ।७

'गिरधर नागर' के अतिरिक्त प्रभु के किसी अन्य रुप का उल्लेख क्या, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई संकेत भी उनके इस वक्तव्य नही है ।

नमूने के तौर पर यह उनकी रचना देखिये -

मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई ।

मीरा ने अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण की कल्पना अपने पति के रुप में की है। अपने रहस्यमय गीतों में भी मीराँ ने श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति और अपार प्रेम दर्शाया है। इसी से उनका रहस्यवाद कबीर के रहस्यवाद के समान शुष्क नहीं होने पाया ।८

मीरा की भक्ति भावना एवं इष्ट के स्वरुप पर जब हम विचार करते है तो देखते है कि 'श्रीगिरधरलाल' अथवा गिरधर गोपाल ही मीरा के एक मात्र आराध्य थे। जिन्हे मीराने उनके विविध रुप गुणानुसार नटवर नागर, नन्दलाल, नन्दनंदन, मोहन, हरि, श्याम, बंसीवारे, ललना, बाँकेबिहारी, सांवरिया, गोविन्द, प्रभु, पिया, प्रियतम, शामसुन्दर आदि अनेक नामों से पुकारा है। संत व योगमत से प्रचलित शब्दावली- सत्गुरु, जोगी, जोगिया, साहब आदि नामोंसे भी पुकारा है। मीराँ द्वारा अपने आराध्य को विविध नामोंसे संबोधित किये जाने का यही रहस्य है।

मीराँ का सम्पूर्ण प्रेम, उनकी अशेष भक्ति, इन्ही सगुण लीलाधारी कृष्ण के प्रति निवेदित हुई है, जिनका 'गिरिधर' नाम ही मीराँ को अधिक प्रिय था। मीराँ ने एक नही, अनेकों पदों मे उसी सगुण, साकार कृष्ण को ही अपने आराध्य-रुप में स्वीकार किया है। वे ही मीराँ के प्रियतम, प्राणाधार है, सर्वस्व है।

नमुने के तौर पर कुछ पद -

१)मै तो साँवरे के रंग राती ।
२)हरि मेरे जीवन प्रान अधार ।
३)मै गिरधर के घर जाऊँ ।
४)मै गिरधर के रंग राती ।
५)मेरे मन बसियो गिरधर लालसों ।

निम्बार्क सम्प्रदायी वैष्णवदासने 'मीरा गिरधर भजी' कहकर इसी तथ्य की पुष्टी की है की मीराँ के आराध्य 'गिरधर नागर' ही थे। अवधूतनाथपंथी राधाबाई ने भी मीराँ को श्यामसुन्दर की ही उपासिका कहा है।-

मीराँबाई नाम भजो श्याम सुन्दर ९

संक्षेप में -

मीरा की समस्त साधना कृष्ण के सगुण-साकार अवतारी रुप पर ही केन्द्रित है। वस्तुत: यही रुप उनकी आराधना का एकमात्र लक्ष्य है। मीराबाई द्वारा किये गये इष्ट देव के निर्गुणवत् निरुपण तथा उसकी प्राप्ति के लिये प्रयोग में आनेवाली चारित्रिक साधनाओं के आधार पर कुठ लोग उन्हे संतमत की अनयायिनी मानते है परन्तु मीराँ ने अपने अनेकों पदो में उक्त 'हरि अविनाशी' को ही परम ऐश्वर्यशाली एवं लीलामय भगवान् के सगुण रुप में अंकित किया है।

मीरा की उपासना पद्धति :

महामुनि शांडिल्य के अनुसार ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति अथवा निरतिशय अनुराग ही नाम भक्ति है - 'सा परानुरक्ति रीश्वरे' (शांडिल्य भक्ति सूत्र २१)

देवर्षिनारद के अनुसार भगवान में अनन्य प्रेम हो जाना ही भक्ति है।

'सात्वस्मिन् परम प्रेमरुपा११'

कामार्त व्यक्ति के मन में जैसी तीव्र आकुलता एवं छटपटाहट होती है, वैसी ही तीव्र एवं उत्कट लालसा भक्त के मन में ईश्वर के प्रति हो' इससे बढकर 'परानुरक्ति' की लौकिक शब्दावली में व्याख्या नही की जा सकती। मीरा इस प्रेमाभक्ति की जीवन्त प्रतिमा है।

उदा.

१)जाणाँरे मोहणा, जाणाँ थारी प्रीत ।१२
प्रेम भगति रो पैडा म्हारो, अवरु ण जाणाँ रीत
२)हरि विण क्यूँ जिवाँ री माय ।।
स्याम बिना बौराँ भयाँ, मण काठ ज्यूँ घुण खाय।
मूल ओखद णा लागाँ, म्हाणे प्रेम पीडा खाय।
मणि जल बिछड्या णा जीवाँ तलफ मरमर जाय।
ढूँढताँ बण स्याम डोला, मुरलिया धुण पाय।
मीराँरे प्रभु लाल गिरधर, वेग मिलस्यो आय ।१३
३)स्याम मिलण रे काज सखी, डर प्यारति जागी।
तलफ तलफ कल णा पाडों विरहानल लागी ।।१४
४)सइयों, तुम विणि नींद न आवै हो।
पलक पलक मोहि जुगसे बीतै, छीनि छिनि विरह जरावै हो ।१५

उपरनिर्दिष्ट पदोंसे यह बात स्पष्ट हो जाती है।

नाभादास, 'भक्तमाल' के रचयिता लिखते है -

सदृश्य गोपिका प्रेम प्रगट कलियुग हि दिखायों।
निरअंकुश अति निडर, रसिक जन रसना गायौ ।१६

राघौदास कृत भक्तमाल में भी ऐसा ही उल्लेख हुआ है।

गोपिन की सी प्रीति रीति कलिकाल दिखाई।
रसिकराइ जस गाई, निडर रही सन्त सुभाई।
नौबत भक्ति धुराई कै पति सो गिरिधर ही सजे।

राघौदास के उल्लेख से यह भी स्पष्ट है कि मीरा ने पत्नी भाव से गिरधर की आराधना की थी। पति को परमेश्वर मानने के समय उन्होंनें परमेश्वर कोही अपना पति मान लिया था। मीराँ के अपने पद भी उसके रस मार्गी या प्रेमाभक्ति की उपासिका होने का ही संकेत करते है।

उदा. -

१)मीराँ सिरी गिरधर नटनागर भगत रसिली जाँची।
२)अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम-बेल बोई।
३)प्रेम भगति रों पैडों ओर न जाणौं रीत
४)जाओ निरमोहिया जाणी तेरी प्रीत।

मीराँ अपने इन्ही गिरधरलाल के प्रेम रस में आकंठ डूबी थी। वैधव्य के फल स्वरुप जीवन में आये शून्य तथा स्वजनों की निर्मम प्रताडनाओं ने उसे अपने गिरधर के और भी समीप ला दिया। वह अहर्निश उन्ही कें ध्यान में लीन रहने लगी। श्याम का विरह उसे प्रतिपल सताने लगा। उसका रोम-रोम कृष्ण- दर्शन के लिये व्याकुल हो उठा एवं उनके बिना विरह से व्याकुल हुई मीरा मछली सी छटपटाने लगी। मीराँ की दशा भी कुछ ऐसी ही थी।

१)घडी एक नही आवडै, तुम दरसण बिन मोय
२)हेरी मै तो प्रेम दीवानी, मेरो दरद न जाणै कोय।
३)दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहीं कोय।
४)मै विरहिणी बैठी जागूं, जगत सब सोवैरी आली
५)क्यूं तरसावौ अन्तर जामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
६)प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम नि रहयो न जाय।
७)जोगी मत जा, मत जा, मत जा, पाँव परुँ मै तेरौ।
८)ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी।
९)तुम देखे बिन कल न परति है, तलफि तलफि जीव जासी।

मीरा द्वारा रचित काव्यरचनाओं में संगीत की माधुर्यता तथा गायन कुशलता का दृष्टान्त मिलता है और प्रश्न उठते है।

१)संत मीरा ने गायन तथा नृत्य की नियमानुसार शिक्षा कहाँ, किस गुरु के मार्गदर्शन में प्राप्त की थी?

२)कीर्तन शैली का प्रादुर्भाव होने के क्या कारण थे?

अपनी शैशवावस्था सेठही मीरा को मेडता में धार्मिक संस्कार के साथ ही शिक्षा प्राप्त हुई थी।

१७राज परिवार में जहाँ संगीत को राजाश्रय प्राप्त था, वहाँ राजकुल की कन्याओं को नृत्य गायन की शिक्षा आवश्यक रुप से हो जाती। उनके पितामह दूदाजी वैष्णव मतानुयायी होने के कारण मीरा को भी कीर्तन प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक ही था। राव दूदाजी के विशेष प्रयत्न के कारण मीरा को संगीत की पावन धारा भक्ति संगीत का मोक्षदायी मार्ग प्राप्त हुआ था, जो मीराँ के भावी विरक्त जीवन को सफल बना सका।

मीराँ को अपनी भक्ति संगीत की प्रतिभा को उज्वल बनाने में ससुराल का वातावरण भी अनुकूल प्राप्त हुआ था। सिसोदिया राजवंश जो कि अपने शौर्य के कारण विख्यात था, संगीत के स्वरामृतों तथा नूपरों की मधुर ध्वनि के कारण प्रसिध्दी पाए था। संगीत प्रवर्तक महाराणा कुंभा के संरक्षण में भारतीय संगीत को विशेष आश्रय प्राप्त था। कुंभाने संगीत 'प्रदीपिका', 'संगीत सुधा', संगीतराज' ग्रंथ लिखे थे। मेवाड राज्य का यह सांगीतिक वातावरण मीरा को अपने उत्कर्ष के लिये सहायक रहा।

मीराँ मेडता को त्यागकर (सन १५३८ के आस-पास) जब वृंदावन पहूँची वहीं के भक्तियुक्त सांगीतिक वातावरण से मीरा का संगीतज्ञान और भी विकसित हुआ। इस काल में मीरा कुशल कवयित्री तथा संगीतज्ञ, भक्ति गीत गायिका के रुप मे प्रसिध्द हो गई थी। मीराँ के पदों की डाकोर तथा काशी की प्रतियों में रागों का उल्लेख नहीं है। वैष्णवदास के टिप्पण और नागरीदास कृत नागरी समुच्चय मे जो पद उद्धृत है उनमें रागों के नाम नही दिये गये है। मीराँ के पदों के कम से कम २७ रागों में गाये जाने के संकेत मिलते है। आनंद भैरो, कान्हडा, जोगिया, तिलंग, प्रभाती, पूर्वी, एक ताला,

वनकली, मल्हार, सिंहा, आसावरी, काफी, टोडी, धानी, पीलू, बरवा, बागेश्वरी, भैरवी, ललित, सोरठ, कालिंगडा, कामोद, देश, पीलू, परज, बिहाग, मारु, हमीर, झिंझोटी।

मीराँ के नाम से प्रचलित समस्त पदों में रागों की संख्या ६२ से उपर पहूँच जाती है। ऐसा भी हुआ है कि एक ही पद विभिन्न प्रतियों में विभिन्न रागों के साथ उद्धृत मिलता है। इनमें से मल्हार इन रागों की रचना निश्चित ही तानसेन ने की थी, जो मीराँ के परवर्ती थे। मीराँ ने अपने किसी पद में राग-रागिनी, ग्राम मूर्च्छना, तानें आदि का प्रयोग नही किया जैसे कही-कहीं सूर के पदों मे मिला है।१८

मीराँ का राग मल्हार :

मीराँबाई के नाम पर मल्हार का एक विशिष्ट रुप की मल्हार राग कहलाता है। यह आसावरी थाट से उत्पन्न होता है। आरोहावरोह १६ स्वर का होता है, इस की जाती संपूर्ण है। वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज और गाने का समय रात्री का दूसरा प्रहर, राग में दो गंधार, दो धैवत और २ निषाद होते है।
(महाराष्ट्रीय ज्ञान कोष(र), पृष्ठ, ५५)

२) लखनौ के प्रसिध्द संगीतज्ञ के कथन के आधार पर श्री भातखण्डे जी कहते है, मल्हार और अडाना मिलकर मीरा की मल्हार हो जाते है।१९

परंतु यहाँ विचारणीय यह बात है कि यदी मीरा की मल्हार नामक कोई राग अस्तित्व में यदी था तो अन्य किसी संगीत ग्रंथ में उसका उल्लेख क्यों नही।

इस बात पर प्रभात जी ने लिखा है -२०

१)मियों को प्राय: मिया भी लिखा जाता था। हो सकता है कि मिया की लिपी दोष के कारण मीराँ बन गया और मिया की 'मल्हार' मीराँ की मल्हार बन गयी और धीरे-धीरे उसका एक स्वतंत्र रुप विकसित हो गया।

२)मीराँ ने वर्षा संबंधी बहुत सुंदर पद लिखे है। मल्हार राग का संबंध इस ऋतू से विशेष माना जाता है। हो सकता है कि मीराँ काव्य - संगीत के प्रेमियों ने इस पदों के आधार पर मीराँ की मल्हार की कल्पना की, जो कालान्तर में सूर, मीयाँ और रामदास की मल्हार के समान ही प्रसिध्द हो गई।

संगीत की प्राचीन परंपरा मौखिक अधिक रही है और लिपि-दोष उसे अधिक प्रभावित करने में सक्षम नहीं रहा। अतएव यही अधिक संभव प्रतीत होता है कि उनके पदों के आधार पर उनके पद-प्रेमी संगीतज्ञोंका निर्माण है।

मीराँ के पदों में भावानुकूल रागों का निर्वाह एक बडी विशेषता है। सामान्यत: राग शब्द का अर्थ ही है, 'रंजयति इति राग:। जो रंजन करता हो अर्थात मन में एक निश्चित भावना या भावतरंग उठा देता हो।

मीराँ के पद जिन-जिन रागों में प्राय: गाये जाते है, उनके द्वारा जागृत भाव, पद के अर्थ से संबध्द भाव के पोषक है। अधिकांश राग करुण तथा श्रृंगार से संबध्द है। जैसे-जोगिया का संबंध करुणा से है, आसावरी, पीलू, हमीर, भैरवी, श्रृंगार, तिलंग करुण श्रृंगार, जोगिया करुण, देस चंचल श्रृंगार से संबध्द है।

संत मीराँबाई का करुणा भरा जीवन गिरधर के प्रेमसे संसिक्त था। करुणा और श्रृंगार का प्राधान्य उनकमे होना स्वाभाविक ही था, पर उसे शब्दार्थ और स्वर दोनों के सहारे एक साथ उतारना महान प्रतिभा और सम्यक अभ्यास का ही परिणाम है।

निष्कर्ष :

१)भगवान का अनुस्मरण करनेवाले जन के हृदय में भगवान के प्रति जो आसक्तिपूर्ण पर अनपायिनी प्रीति होती है, वही भक्ति कहलाती है।

२)मीराँ ने प्रेमभाव की भक्ति की थी, उनका प्रेम गोपियों का सा था और प्रेम का आलम्बन रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण थे।

३)मीराँ ने अपने पदों में उनके रसमार्गी होने के स्पष्ट संकेत दिये है।

४)मीराँ की भक्ति में गौणी भक्ति का स्वर गौण है, उनमें केवल सात्विकी और आर्त भक्ति के उदाहरण उनकी भावाभिव्यक्तियों में मिलते है।

५)मीरा द्वारा रचित काव्य-रचनाओं में संगीत की माधुर्यता तथा गायन कुशलता का दृष्टांत मिलता है।

६)मेवाड राज्य का सांगितिक वातावरण मीरा के उत्कर्ष के लिये सहायक रहा।

७)मीरा के युग को 'भक्ति संगीत के स्वर्ण युग' इस नाम से भी कहा जाता है।

८)यह तो निश्चित ही है कि मीरा संगीत कलासे पूर्ण परिचित थी।

९)पग घुंघरु बाँध मीरा नाची रे। इस सुप्रसिध्द काव्य-पंक्तिसे यह पुष्टि भी मिलती है की मीरा ने गायन के साथ-साथ नृत्य को अपना कर कृष्ण-काव्य को सर्वाधिक भावपूर्ण बनाया था।

उपसंहार :

मीराँ ने अनुभूति के अमूल्य क्षणों को सरस शब्द ही नहीं बल्कि सराग स्वर भी दिये। सामान्य छंद का सहारा उन्होंने नहीं लिया क्यों कि छंद कविता को लय तो दे सकता है, राग नहीं, जो एकमात्र संगीत की सिध्दी है और इसमें संदेह नहीं कि सुप्रयुक्त राग अभिव्यक्ति को सबल ही नहीं, उसके प्रभाव को व्यापक भी बनाता है। कदाचित इसीलिये अपने युग के अन्य महान भक्तों की तरह उन्होंने भी आत्माभिव्यक्ति के माध्यम कि रुप में 'गेयपद' को चूना, जो साहित्य ओर संगीत की मिलन भूमि पर जन्मा काव्यरुप है और जिसमें भावधर्मी शब्द-साधना संगीत के स्वर विधान में आकार ग्रहण करती है। मीराँ का यह सौभाग्य था कि उन्हे पद की कई शताब्दियों की विकसित परंपरा का उत्तराधिकार अनायास ही मिल गया।

फुटनोट :

१)ऋग्वेद ६/१/५अ
२)ऋग्वेद ८/९८/११
३)संगीत अंक जनवरी-फरवरी, १९७८ पृ. २५
४)संगीत (मीरा संगीत अंक) जन - फरवरी, १९७८.
५)भागवत संप्रदाय ३४८
६)डॉ. प्रभात, मीराँबाई, पृ. ३०३, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड, हीराबाग,बम्बई-४
७)नागर समुच्चय, पद प्रसंग माला, मीराँ संबंधी प्रसंग
८)शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली (१९६९) पद्म बुक कम्पनी, जयपुर, पृ. ३८
९)प्राचीन काव्यमाला, ग्रन्थ ६, मीरा - महात्म्य, कडी - १
१०)मीराबाई की पदावली, सं. परशुराम चतुर्वेदी, पृ. ३६-३७.
११)नारदीक्ति सूत्र - २ गीता प्रेस - गोरखपुर, पृ. २०
१२)शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली पृ. १७९
१३)शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली (१९६९) पद क्र. ९० पृ. २२२
१४)शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली (१९६९) पद क्र. ९१ पृ. २२३
१५)शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली (१९६९) पद क्र. ९२ पृ. २२४
१६)(श्री भक्त माल. पृ. ७१२) शंभुसिंह मनोहर, मीरा पदावली पृ. ५१
१७)संगीत (मीरा संगीत अंक) जन-फरवरी, १९७८ पृ. २६.
१८)सूरसागर - दशम स्कंध, पद ११५१ तथा पद १३५३.
१९)भातखण्डे संगीत शास्त्र (प्रथम भाग) पृ. २४७-२५३
२०)डॉ. प्रभात सी.एल (१९६५), मीराबाई पृ. ४१९

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

१)पं. भातखंडे, विष्णु नारायण, संगीत शास्त्र, (भाग १), पॉप्युलर प्रकाशन प्रा.लि. १९९२.
२)मनोहर शंभुसिंह (१९६९), मीरा पदावली, पदम बुक कंपनी, जयपुर
३)नारद भक्तिसूत्र २ - गीता प्रेस - गोरखपूर
४)डॉ.प्रभात, मीराबाई (जन. १९६५) प्रथम संस्करण, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड, हीराबाग, बम्बई - ४
५)संगीत (मीरा संगीत अंक) जन-फर १९७८, संगीत कार्यालय, हाथरस